

तु नूलु द्सि र; {क फ्ल } कुर ध्ह ०; ओक्फ्ज द्मि क्न्स र्क %&

**Dr. Sangeeta Singh**

**Assistant Professor**

**K.D.S Mahavidyalaya Subaspur Pali, Jaunpur**

तु नूलु द्सि र; {क फ्ल } कुर वुहूज ओन्ही फोक्ज/क्कज्ज ए प्लोक्ड द्स व्हर्फ्ज ड्र च्क्ष , ओ  
तु नूक्फ्लुद्सि उह्ह इ़ेक.क फोक्ज द्स ग्ह व्हक्कज्ज इ ज विउह र्हरो एहेक्ड क ध्ह फोपुक ध्ह ग्स  
र्हक्क ; ग इ़ेक्फ.क्र द्जुस द्सि इ़ेक्ल फ्ड; क ग्स फ्ड ; फ्लक्कल क्कु ध्ह इ़ेक्लर द्सि इ क्क उग्ह इ़ेक.क  
ग्स ब्ल इ एल/क ए तु नूलु द्सि इ़ेक.क फोक्ज ध्ह फोपुक ; ग्क्ज इ़ेक्ल फ्ड ग्स इ़ेक.क्य{क.क  
के सन्दर्भ में बहुत सारी परिभाषाएं दी गये हैं। किसी ने स्वप्नावभाषी ज्ञान को प्रमाण<sup>1</sup> क्र्यक्त किया है। तो किसी ने स्वप्नावभाषी बाधारहित ज्ञान को प्रमाण बतलाया है। किसी की दृष्टि में  
स्वरावभाषी व्यवसायात्मक ज्ञान प्रमाण है तो किसी की दृष्टि में अनधिगतार्थक अविसंवादी  
क्कु<sup>2</sup> ग्ह इ़ेक.क ग्स

तु नूलु द्सि वुहूज क्कु द्सि न्स : ल्क ग्स इ़ेक.क व्हक्ज उ; आ इ़ेक.क द्सि व्हर्हल्लो ल्र्ह द्सि म्ल क्कु  
इ ग्स त्स ह ध्ह ओ लो; ए ग्स व्हक्ज उ; द्सि र्हरी ; ल्म्ल ल्र्ह द्सि क्कर्ह इ ज फो”ष प्रसंग अथवा  
सम्बन्ध में ज्ञान से है। इस प्रकार किसी विषय के यथार्थ ज्ञान के लिए प्रमाण और नये दोनों  
ध्ह व्हक्ज”; द्सि ग्कर्ह ग्स

म्ड्र र्ह; क्क ध्ह फोपुक इ ज ; ग इ़ेक्फ.क्र ग्कर्ह ग्स फ्ड क्कु एहेक्ड क ध्ह इ एल; क द्सि व्हक्कज्ज  
इ़ेक.क फोक्ज ग्ह ग्स तु नूलु ए र; {क ध्ह वो/क्क.क द्सि इ़ेक्ल इ ल्र्ह य्स[क ए फ्ड; क त्कु  
ग्स इ र; {क इ़ेक.क द्सि ; फ्लक्कल लो; ल्क ध्ह फोपुक इ ज ग्ह क्कु ध्ह एहेक्ड क ल्क; क्कर इ एल; क्कर्ह द्सि  
इ एक/क्कु इ एक्को ग्स

1- इ र; {क इ़ेक.क %&

तु नूलु द्सि वुहूज ब्ल क्कु ध्ह मरी र्हर ए प्ल वोफ्क्कव्ह ए ख्प्जुक इ मर्ह ग्स त्स  
व्हक्फ्यफ[क्र ग्स %&

vupku i ek. k %&

tम् nk”kud vupku dks Hkh ; FkkFkz Kku dk i ek. k ekurs gA os l oI Fke pkokd nk”kudks dh vupku i ek. k [k. Mu ofRr dh vkykpuq djrs gA vkJ ; FkkFkz Kku ds i ek. k ds : lk eI vupku ds i ek. k rRo dks LFkkfi r djrs gA tम् nk”kudks us fn[kk; k fd pkokd fopkj d 0; kfIr dk fujkdj.k djds vupku dk [k. Mu djuk pkgrs gA fdUrq i R; {k gh , d ek= i ek. k gS ^vupku i ek. k\* ugha gS muds ; s dFku mudh bl vkJFkk dh vkJ I dr djrs gS कि कतिपय दृष्टान्तों में व्याप्ति सम्भव है।

tम् nk”kud vU; kU; Hkkjrh; nk”kudks ds l eku ; FkkFkz Kku dh i kfIr eI vupku ds i ek. k eI fo”okl djrs gA

vupku , d ijk&k Kku gS ft l eI gry ds vkJk j ij l k; dk Kku i klr gk gS tS s i ok i j /kqj dks ns[kdj ogkj vkJ dk Kku i klr djuk vupku l s gh l EHko gA vU; kU; Hkkjrh; nk”kudks ds nks Hkn Lohdkj djrs gA LokFkz vkJ ijkFkz vi us l a;k; dks nj djus ds fy, fd; k x; k vupku LokFkz vupku gA nI jk dh l a;k; fuofRr ds fy, fd; k x; k , oI 0; ofLFkr rjhds l s 0; Dr fd; k x; k vupku ijkFkz vupku gA जैन तर्क शास्त्री सिद्धसेन fnokdj U; k; nk”kudks ds l eku gh vupku eI i kp vo; o Lohdkj djrs gS & i frKk हेतु, दृष्टान्त, उपनय और निगमन भद्रवाह अनुमान eI n”kko; o ekurs gS i frKk i frKk विभक्ति हेतु विभक्ति विपक्ष, विपक्ष प्रतिवेध दृष्टान्त, आ”kdkj vkJkdk ifrostk vkJ fuxeu vupku i ek. k dk foLrr foopu U; k; n”kU eI fd; k x; k gA

### **भाब्द प्रमाण :-**

शब्द प्रमाण भी जैन द”kU eI , d ijk&k i ek. k gA Jyज्ञान शब्द प्रमाण से ही प्राप्त होता है। tम् n”न में शब्द प्रमाण के भी भेद किये जाते हैं। लौकिक और शास्त्रज। तत्त्ववेत्त fo”वसनीय व्यक्तियों के शब्दों एवं वचनों से प्राप्त ज्ञान लौकिक ज्ञान है और शास्त्रों के अध्ययन से प्राप्त शास्त्रज ज्ञान है।

u; fl ) kUr %&

tम् n”kU dh Kku ehedk dk , d egRoiwz i {k mudk u; fl ) kUr gS mYys[kuh; gS fd dHkh tम् n”kU eI Kku ds nks Hkn i klr gkrs gS i ek. k vkJ u; A tम्uer eI i ek. k ds }kjk

rRok<sup>8</sup> dk Kku gkrk g<sup>A</sup> t<sup>8</sup> n<sup>9</sup> निक प्रमाण के अतिरिक्त दृष्टिकोण विशेष जिसे वे "नय" देते हैं। से भी तत्वों के ज्ञान की पुष्टि करते हैं। i<sup>ek.k</sup> l<sup>s oLr<sup>9</sup> dk</sup> | Ei<sup>wk</sup> Kku gkrk g<sup>A</sup> fd<sup>l h i nkFk dks ml h</sup> : lk e<sup>8</sup> tkuuk ft<sup>l</sup> : lk e<sup>8</sup> og g<sup>A</sup> (To know the object as it is) i<sup>ek.k</sup> g<sup>A</sup> u; l<sup>s oLr<sup>9</sup> dk vkr<sup>9</sup>kd</sup> Kku gkrk g<sup>A</sup> b<sup>l h dkj</sup> i<sup>ek.k</sup> dks l<sup>d ykn<sup>9</sup>k dgk tkrk g<sup>8</sup> vkr<sup>9</sup> u; dks fodykn<sup>9</sup>kA t<sup>8</sup> n<sup>9</sup> न वस्तु के विषय में व्यक्ति के आँ<sup>9</sup>kd Kku ; k सापेक्ष दृष्टिकोण को 'नय' कहता है। इस प्रकार नय किसी वस्तु के विषय में आँ<sup>9</sup>kd दृष्टिकोण है एक दे<sup>9</sup>kf<sup>9</sup>ष्टोडथर्थ नय स्थविषयोमह।<sup>3</sup></sup>

U; k; I<sup>w</sup> dkj xkr<sup>8</sup>e dk er g<sup>8</sup> fd & p{kr<sup>9</sup>f<sup>9</sup>u<sup>9</sup> ckâ; i nkFk ds i kl tkdj ml dk सन्निकर्ष करती है और तब उस सन्निकर्ष के फलस्वरूप प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। न्याय के इस fl ) kUr dks ft<sup>l</sup> s<sup>8</sup> k<sup>9</sup>; dkfj rkokn<sup>\*</sup> dgrs g<sup>A</sup> ehek<sup>8</sup> k onkUr vkrn n<sup>9</sup>k<sup>9</sup>ks e<sup>8</sup> Hk<sup>9</sup> ekU; rk nh xb<sup>8</sup> g<sup>A</sup>

Kku ehek<sup>8</sup> k dh mDr | eL; k ds | ek/kku e<sup>8</sup>; | fi vkr<sup>9</sup>ud ; k e<sup>8</sup> | ek/kku djus dk rkfd<sup>8</sup> i<sup>8</sup> kl telu nk<sup>9</sup>ud dkUvus vo"; fd; k g<sup>A</sup>

mDr foopu l<sup>s</sup>; g i<sup>ekf.kr</sup> gkrk g<sup>8</sup> fd i<sup>ek.k</sup> fopkj e<sup>8</sup> vudkud HkkUr /kkj. kk, fo | eku ग ज्ञान के प्रमाण रूप में किसे स्वीकार किया जाय यह भी चिन्तन का विषय है।

## I UnHk विशय-सूची

- |   |                                       |
|---|---------------------------------------|
| 1- cEge   #   | & शंकराचार्य                          |
| 2- v} } fl } kUr  | & e/kd wku   jLorh                    |
| 3- Hkkj rh; n <sup>9</sup> k <sup>9</sup>                               | & vkrpk; l cyno mi k/; k;             |
| 4- jRu i Hkkko Vhd <sup>8</sup>   | & शंकराचार्य                          |
| 5- Hkkj rh; n <sup>9</sup> k <sup>9</sup>                               | & nojkt uUnfd <sup>9</sup> kkj        |
| 6- Jhen Hkkxor xhrk   | & Jh gfj <sup>9</sup> . knkl xks Undk |
| 7- l oh <sup>9</sup> k <sup>9</sup>   xg                                | & Ekk/okpk; l                         |
| 8- ck <sup>8</sup> n <sup>9</sup> k <sup>9</sup> vkr <sup>9</sup> onkUr | & सी०डी० शर्मा                        |
| 9- Hkkj rh; n <sup>9</sup> k <sup>9</sup> dh : i js <sup>9</sup> kk     | & Lkxe yky i k. Ms                    |
| 10-Hkkj rh; n <sup>9</sup> k <sup>9</sup> dh   eL; kvks                 | & डॉ० बद्रीनाथ सिंह                   |

व्याख्या विद्यार्थी का नाम

- |  |                       |
|--|-----------------------|
| 11- ज्ञानोदयी                              | & उक्ति               |
| 12-प्रत्यक्षरूप                            | & व्याख्या            |
| 13- लक्षणपूर्वक व्याख्या                   | & विभाग               |
| 14- इकलौतुम् विवरण                         | & वेदाधिकरण           |
| 15- ऋग्वेदिक सूत्र                         | & दर्शन               |
| 16-रूप विवरण, ओक्टोप्स का विवरण            | & दंष्ट्र उक्ति विवरण |
| 17- Six ways of knowing                    | - D.M. Dutt           |
| 18- Brahma – Sutra                         | - S. Radhakrishnan    |
| 19- A critical Survey of Indian philosophy | - C.D. Sharma         |
| 20- Hinduism and Buddhism                  | - A. Coomarswamy      |